RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

पश्चिमी उत्तर प्रदेश की शहरी एवम् ग्रामीण विधार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

[1]हृदेश कुमार शर्मा ; [2]डा० आर० आर० सिंह

[1]Research Scholar, Mewar University
[2]Research Guide, Mewar University

ARTICLE DETAILS
Article History
Published Online: 15 April 2019

Keywords
शहरी ग्रामीण पर्यावरण जागरूकता

ABSTRACT
प्राचीन काल से ही अर्थात् सृष्टि के आरम्भ से ही मानव ने अपने आपको सितारों की छाँव में पाया, यहीं से उसमें अनुसन्धान की भावना का उदय हुआ और पर्यावरण के क्षेत्र में उन्होंने इतना गहन अध्ययन किया कि ब्रह्माण से सम्बन्धित सभी विचारणीय तथ्यों की एक–एक कर स्पष्ट करने का निरन्तर प्रयास जारी रखा जिसके आ*ज* मानव पर्यावरण, प्रकृति, ब्रह्माण्ड आदि से सम्बन्धित सभी तथ्यों पर अपने आँकड़े तथा उनसे सम्बन्धित शोधों के निष्कर्षों को सफलता की कसौटी पर खरा आंकता है।

सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानव प्रकृति के साथ तालमेल रखते हुए अपना जीवनयापन करते थे। प्रातःकाल उठते ही सभी लोग सूर्य नमस्कार से लेकर, जल अर्ध तक विधिवत रीतियों से सूर्य देवता के प्रति सम्मान का भाव रखते थे। ऊर्जा के स्त्रोत सूर्य को देवता मानकर कहा गया है – '**सूर्यदेवोभव**' अर्थात् सूर्य को देवता समझो। सूर्य देवता भूमण्डल का जीवनदाता है क्योंकि बिना उसकी ऊर्जा के पृथ्वी पर किसी भी प्रकार का वन, वनस्पति, जीव, जन्तु की उत्पत्ति सम्भव नहीं है। और बिना वनस्पति जगत के जीव जगत की कल्पना करना कपोलकल्पित है।

एते पृथिवि, स्योनमस्तु'' (अथर्ववेद 12–1–12) रूद्र को वृक्ष और अरण्यों का स्वामी कहकर 'वृक्षवा पतये नमो नमः' तथा 'अरण्यानां पतये नमो नमः (यजुर्वेद 5–19–20) द्वारा उसका नमन किया।

प्रस्तावनाः–

पर्यावरण का सीधा अर्थ है 'प्राकृतिक वातावरण'। इसके मुख्य रूप से तीन अंग हैं – भूमि, हवा व जल। इनका सन्तुलन भंग होने की अवस्था का नाम ही प्रदूषण है और प्रदूषण के कारण ही पर्यावरण असंतुलित होता है। असन्तुलन की समस्या प्राकृतिक भी है और मानव निर्मित भी। दावानल का धुआँ, ज्वालामुखी की राख, धूल–कण, सामूहिक प्रदेशों में नमक के कण आदि प्रकृति निर्मित है। औद्योगिकरण व शहरीकरण से जो समस्याऐं बढ़ी हैं उनके पीछे मानव का हाथ है। नदियों से रासायनिक घोलों तथा कूड़े करकट का मिश्रण, कल कारखानों के धुऐं, दूषित वायुमण्डल, वन विनाश और खनिज पदार्थों का अति मात्रा में दोहन आदि ऐसे महत्वपूर्ण कारण है, जो अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूस्खलन व प्राकृतिक आपदाओं का भी कारण बन रहे हैं।

मानव जीवन से संयम बिल्कुल समाप्त हो गया है यदि मानव आज भी अपनी भौतिक सुख सुविधाओं के साधनों को जुटाने में संयम अपना सके तब शायद हम पर्यावरण के असन्तुलन को रोक सकेंगें।

हमारे पूर्वजों का चिन्तन वैज्ञानिक था वे समझते थे कि बांधों तथा जलाश्यों का पर्यावरण तब तक स्वस्थ नहीं रहेगा जब तक सम्पूर्ण पारिस्थितिकी व्यवस्था का विकास न हो। वराहमिहिर ने अपनी पुस्तक 'वृहत्संहिता' में लिखा है

अर्थात् बांध पूर्वापरायते बनाया जाना चाहिए, उसमें पानी अधिक ठहरता है। जलाश्य या बांध का कच्चा बंद वायु की दिशा के विरूद्ध या दक्षिणोत्तर हो तो तरंगें उसे नष्ट कर देती हैं। अतः मिट्टी व लकड़ी, पत्थर की टूटी हुई दीवार बनवानी चाहिए। जब जलाश्य या बांध बन जाए तब उनके प्रबन्धन और जल संग्रहण क्षेत्र के विकास के लिए प्रयत्न किये जाने चाहिए।

भारतीय जीवन संस्कृति और पर्यावरण के अत्यन्त गहरे सम्बन्ध रहे हैं। भारतीय जीवन पद्धति का मूल्य आधार प्रकृति एवं उसके द्वारा निर्मित पर्यावरण रहा है। इसी संस्कृति में पवित्र धरा जो धन धान्य से परिपूर्ण करने वाली जीवन दात्री के रूप में उसे माँ (जननी) जैसा सम्मान दिया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

सुविधा की दृष्टि से सामग्री को निम्न दो भागों में विभाजित किया गया है।

1. भारत में किये गये शोध एवं सम्मेलन
2. विदेशों में किये गये शोध एवं सम्मेलन।

2.1 भारत में किये गये शोध–

वर्मा, एस. (2014) ने ''जूनियर हाईस्कूल के छात्रों में पर्यावरण सम्बन्धी ज्ञान एवं जागरूकता के विकास के लिये शिक्षण कार्यक्रम का निर्माण तथा उसकी प्रभाविता का

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अध्ययन'' शीर्षक से एक शोध लखनऊनगर के कक्षा–सात के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों के 539 विद्यार्थियों पर किया। अध्ययन के पश्चात् ज्ञात हुआ कि प्रायोगिक समूह में पर्यावरणीय ज्ञान और जागरूकता नियन्त्रित समूह से अधिक है। शिक्षण कार्यक्रम की प्रभाविता तथा लैंगिक भिन्नता, बौद्धिक भिन्नता एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक सम्बन्ध प्राप्त किया गया। प्रायोगिक समूह की शिक्षण दिये जाने से पूर्व तथा बाद की पर्यावरणीय अभिवृत्ति में भी सार्थक अन्तर उपस्थिति था।

कुमार, एस. और अनीता (2014) द्वारा ''इफैक्टिवनेस ऑफ सेल्फलर्निंग मॉड्यूल इन मैथेमैटिक्स इन रिलेषन टू क्लासरूम इन्वायरन्मेण्ट'' शीर्षक से एक प्रयोगात्मक अध्ययन किया जिसका उद्देष्य स्व–अधिगम मॉड्यूल तथा कक्षाकक्ष पर्यावरण का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना था। न्यादर्श हेतु 40 विद्यार्थी यादृच्छिक ढंग से चयनित किये गये तथा क्लासरूम इन्वायरन्मेण्ट स्केल, स्व–अधिगम मॉड्यूल, उपलब्धि परीक्षण उपकरणों के रूप में प्रयुक्त किये गये। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि स्व–अधिगम मॉड्यूल तथा कक्षाकक्ष पर्यावरण विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।

2.2 विदेशों में किये गये शोध एवं सम्मेलन।

बरतोश, ओ. (2013) द्वारा ''इन्वायरन्मेण्टल एजूकेशन : इम्प्रूविंग स्टूडेण्ट अचीवमेण्ट'' शीर्षक से किये गये शोध का उद्देश्य परम्परागत विषयों जैसे गणित, पढ़ना और लिखना में विद्यार्थियों की उपलब्धि पर पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करना था। शोध द्वारा पर्यावरण विद्यालयों और परम्परागत पाठ्यक्रम के विद्यालयों की तुलना की गई। प्रदत्त संकलन हेतु डब्लूएएसएल और आईटीबीएस परीक्षणों का प्रयोग किया गया। विद्यालयों के शिक्षण और अधिगम वातावरण के मूल्यांकन के लिये एक इलेक्ट्रानिक सर्वे भी किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि सुव्यवस्थित पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम देने वाले विद्यालयों के प्राप्तांक ''नॉन ईई'' विद्यालयों से अधिक थे। परिणामों से यह भी सिद्ध हुआ कि पर्यावरण शिक्षा के कार्यान्वयन और विद्यार्थियों की उपलब्धि में सहसम्बन्ध है।

इमानुएल, एस. (2010) ने ''इवैलुएटिंग इन्वायरन्मेण्टल कॉन्सेप्ट थ्रू कार्टून्स'' शीर्षक से कार्टून–विश्लेषण कार्य के प्रति विद्यार्थियों का दृष्टिकोण पता लगाने के उद्देश्य से एक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य यह भी पता लगाना था कि क्या शिक्षण–अधिगम–प्रक्रिया में कार्टून–विश्लेषण का प्रयोग किया जा सकता है तथा क्या कक्षाकक्ष में मूल्यांकन उपकरण के रूप में भी इसका उपयोग किया जा सकता है? प्रदत्त संकलन के उपकरणों के रूप में समूह–वार्तालाप, अवलोकन, अनुसूची और के छात्र–छात्राओं के पर्यावरणीय बोध में सार्थक अन्तर नहीं है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों में पर्यावरणीय बोध छात्राओं की अपेक्षा प्रबल है।

समस्या कथन– (Statement of Problem)-

शोधकार्य में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया–

शोध कार्य में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सात जिलों का वर्णन किया है। जिनमें से मात्र तीन जिलों का चयन किया जायेगा–

1. हापुड 2. मेरठ 3. गाजियाबाद

शहरी–

शहर उनकों माना गया है जहां कि जनसंख्या 2,00,000 या उससे अधिक है। जहां पर्याप्त भौतिक युग की सुविधायें उपलब्ध हैं। उन्होंने इस भौतिक युग में अपने आपको समायोजित कर लिया है।

ग्रामीण–

ग्रामीण उनको माना गया है जिनकी संख्या 20,000 से कम है और जो शहरी क्षेत्रों से दूर हैं। जहां व्यक्ति में तकनीकी ज्ञान का अभाव है। तथा उनके सामाजिक, राजनीतिक रीति–रिवाज परम्पराओं पर आधारित है। ये समाज की मान्य पुरातन परम्पराओं के लिए व्यक्ति को स्वयं की योग्यता, क्षमात, निपुणता व प्रकृति के स्तर का ज्ञान सहायक रहता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य हेतू निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये हैं जिसके द्वारा ''पश्चिमी उत्तर प्रदेश के शहरी एवं ग्रामीण विधार्थियों के पर्यावरण सम्बंधी ज्ञान का अध्ययन किया जायेगा।''

ये इस प्रकार है–

1. ग्रामीण विद्यार्थियों में जल, वायु तथा मिटटी प्रदूषण की रोकथाम सम्बंधित ज्ञान का अध्ययन करना।

2. शहरी विद्यार्थियों में प्रदूषण के कारण एवम् रोकथाम सम्बंधित अवबोध का अध्ययन करना।

3. ग्रामीण विद्यार्थियों में प्रदूषण के कारण एवम् रोकथाम सम्बंधित अवबोध का अध्ययन करना।

इस अध्ययन के आधार पर ये ज्ञात किया जा सकेगा कि पर्यावरण दूषित होने से मानव जीवन पर कितना गहरा प्रभाव पड़ता है जिससे इनमें ये चेतना जागरूक होगी कि पर्यावरण को स्वच्छ रखना कितना अति आवश्यक है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए निम्नलिखित परिकल्पना की हैं–

1. ग्रामीण विज्ञान वर्ग के छात्रों एवं ग्रामीण कला वर्ग के छात्रों के पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. ग्रामीण व शहरी विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के बीच पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. ग्रामीण व शहरी कला वर्ग के विद्यार्थियों के बीच पर्यावरणीय प्रदूषण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध का सीमांकन

प्रत्येक अनुसंधानकर्ता की कुछ परिसीमांए होती हैं जिन्हें दृष्टिगत रखते हुए वह कार्य करता है किसी शोधकर्ता के लिए आवश्यक नहीं है कि वह समस्या का विस्तृत रूप से विवेचन कर सके।

अर्थात समय व साधन को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने समस्याओं को निम्न प्रकार से परिसीमित किया है।

– प्रस्तुत शोध कार्य में केवल पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जनपदों में से केवल
तीन जनपदों हापुड, मेरठ और गाजियाबाद को सम्मिलित किया गया है।

– प्रस्तुत शोध कार्य में माध्यमिक स्तर के कला एवम् विज्ञान वर्ग के
विधार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

– प्रस्तुत शोध कार्य में केवल यू0 पी0 बोर्ड इलाहाबाद के छात्रों को
सम्मिलित किया गया है।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का उपयोग करने का निश्चय किया है। शैक्षिक समस्याओं के प्रति सर्वेक्षण विधि सर्वाधिक व्यापक रूप से प्रयुक्त किये जाने वाली विधियों में से एक है।

शोध उपकरण एंव सांख्यिकी

दो प्रकार के उपकरण प्रस्तुत शोधकार्य के उपयोग में लाए जाते हैं।

1. स्वरचित उपकरण

2. प्रामाणिक उपकरण

प्रामाणिक उपकरण डॉ0 प्रवीन कुमार झा द्वारा निर्मित उपयोग में लाया जायेगा। इस उपकरण में पांच क्षेत्र दिए गए हैं जिनमें 51 कथन इस उपकरण की विश्वसनीयता का .74 तथा वैद्यता .83 है। चूंकि यह 14 – 21 वर्ष तक के विधार्थियों के लिए उपयुक्त है। इसलिए इसका चयन शोध कार्य हेतु किया जायेगा।

शोध के सम्बंध में विधार्थियों की पर्यावरण चेतना जानने के लिए उपकरण तैयार किए जाऐंगें। जिससे विधार्थियों की पर्यावरण सम्बंधी, अवबोध एवम् आकांक्षा का पता लगाया जा सके।

शोध उपकरण एंव सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में डा0 नलिनी राव द्वारा निर्मित माता–पिता बच्चों के संबधों की मापनी ;च्ब्ैद्ध 1984 का प्रयोग किया गया

प्रस्तुत शोध में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन ज्.जमेज आदि सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया ।

तालिका न0 1

प्रश्न संख्या	विभेदन क्षमता	कठिनाई स्तर	प्रश्न स्वीकृत/ अस्वीकृत
1	0.33	50	स्वीकृत
2	0.26	60	स्वीकृत
3	0.40	73	अस्वीकृत
4	0.33	50	स्वीकृत
5	0.53	60	स्वीकृत
6	0.40	53	स्वीकृत
7	0.46	56	स्वीकृत
8	0.13	40	अस्वीकृत
9	0.46	43	स्वीकृत
10	0.13	46	स्वीकृत
11	0.53	46	स्वीकृत
12	0.06	43	अस्वीकृत
13	0.53	60	स्वीकृत
14	0.26	46	स्वीकृत
15	0.40	46	स्वीकृत
16	0.40	53	स्वीकृत
17	0.26	66	अस्वीकृत
18	0.46	43	स्वीकृत
19	0.46	30	अस्वीकृत
20	0.40	73	अस्वीकृत
21	0.46	50	स्वीकृत
22	0.33	56	स्वीकृत
23	0.26	40	स्वीकृत
24	0.40	46	स्वीकृत
25	0.06	60	अस्वीकृत
26	0.46	63	अस्वीकृत
27	0.53	46	स्वीकृत
28	0.46	63	अस्वीकृत
29	0.40	40	स्वीकृत
30	0.33	56	स्वीकृत
31	0.13	53	अस्वीकृत
32	0.13	40	अस्वीकृत
33	0.33	23	अस्वीकृ

RRIJM 2015, All Rights Reserved

3.6.5.5. अन्तिम प्रारूप का निर्माण –

आरम्भ में शोधकर्त्री द्वारा 40 प्रश्नों का निर्माण किया गया। विशेषज्ञों की राय तथा विद्यार्थियों द्वारा अनुभव की गई कठिनाइयों के आधार पर प्रश्नों की संरचना, भाषा आदि से सम्बन्धित संशोधन किये गये। इसके साथ ही पद विश्लेषण द्वारा प्रत्येक प्रश्न के लिये विभेदन क्षमता तथा कठिनाई स्तर का मान ज्ञात किया गया। नेडेल्स्की (1965) के अनुसार परीक्षण के पदों की विभेदन क्षमता 0.2 से कम नहीं होनी चाहिये। अन्तिम प्रारूप हेतु उन्हीं प्रश्नों का चयन किया गया जिनकी विभेदन क्षमता 0.2 से अधिक है तथा कठिनाई स्तर 40 से 60 प्रतिशत के बीच है।

Reference

1. Barker, R. G. (1969). Wanted : An *eco-behavioural science. In E.P. Willems & H.L. Raush (Ed.) Naturalistic viewpoints in Psychological Research.* New York, Holt, Rinehart & Winston.
2. Buch M.B. (Ed) (1979) *"Second Survey of Research in Education* 1972 – 78.
3. Finnish National Commission for UNESCO 1974. *Report of the Seminar on Environmental Education. Jammi.*
4. Anandlakshmy, S. and Bajaj, M. (1981). *Childhood in the Weavers' Community in Varansi: Socialization for adult roles.* In D. Sinha (Ed.) Socialization of the Indian Child. New Delhi.
5. Shahnawaj. 1990. *Environmental awareness and environmental attitude of secondary and higher secondary school teachers and students.* Ph. D., Education, University of Rajasthan.
6. Gopalakrishnan, Sarojini. 1992. *Impact of environmental education and the primary school children.*
7. Kidwai Zeenat, 1991. *Development of an environmentally oriented curriculum in geography at secondary stage.* (Indian Educational Review, Vol. 26(3), 87-94.
8. Khoshoo, T.N. (1995). Mahatma Gandhi : *An apostle human ecology.* Tata Energy Research Institute, New Delhi.
9. N.C.E.R.T. (1997) : *"Fifth Survey of Educational Research*-1988-92 Volume (I).

RRIJM 2015, All Rights Reserved